bseb 9th hindi notes chapter 11 समुद्र

समुद्र

सीताकांत महापात्र

कवि – परिचय

सीताकांत महापात्र का जन्म 17 सितम्बर , 1937 ई . को हुआ । इन्होंने उडिया परम्परा के आचार – विचार को बखूबी चित्रित किया है । वे भारतीय साहित्य में अपनी एक अलग पहचान रखते हैं । उनकी कविताओं में दयालु साधारण और निर्दोष प्रतीत होते हैं ।

सीताकांत महापात्र उड़िया कवि और आलोचक हैं । इनका जन्म उड़ीसा के एक गाँव हुआ था । सीताकान्त महापात्र साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कवि हैं । ये 1965 बेच के आई . ए . एस . अधिकारी थे । महापात्र जितने अच्छे कवि हैं उतने ही अच्छे प्रशासनिक सेवक भी हैं । 'समुद्र ' पर कविताएँ भारतीय साहित्य में बहुत कम लिखी गयी हैं । इन्होंने ' समुद्र ' की मूल प्रवृत्ति देने की अभिलाषा ' को चिह्नित किया है । मनुष्य की प्रवृत्ति सदा केवल लेने का रहता है इसलिए कवि ने मनुष्य और प्रकृति के अंतर को स्पष्ट किया है ।

कविता का भावार्थ

" समुद्र ' शीर्षक कविता उड़िया के चर्चित साहित्यकार सीताकांत महापात्र द्वारा रचित है । सीताकांत महापात्र के साहित्य में जन साधारण के प्रति गहरी सहानुभूति की अभिव्यक्ति हुई है । उन्होंने परंपरा और सांस्कृतिक बोध को अपने लेखन में पर्याप्त जगह दी है ।

इस कविता में कवि ने समुद्र को समाज का प्रतीक बना कर अपनी बात कही है । समाज के पास कुछ नहीं रहता उसका सबकुछ लोगों का है । वह अपनी अबूझ भाषा में कहता रहता है कि जिसे जो चीज चाहिए वह ले जाए । देने से उसका मन नहीं भरता ।

लोग समुद्र से घोंघे चुन कर लाते हैं । कोई उसका बटन बनाता , कोई नाड़ा काटने के औजार ही बनाता है तो कोई उसे अपने टेबुल पर यादगार के तौर पर सजाकर रखता है । परंतु उसे किसी भी तरह समुद्र के किनारे पड़े रेत में जितना सुन्दर नहीं बनाया जा सकता । जो चीज पूरे समाज के लिए सुन्दर व उपयोगी होती है वह किसी एक व्यक्ति पास जाकर अपनी सुन्दरता व उपयोगिता खो देती है । इसी तरह की बात खेलने में मस्त केंकड़ों के साथ है । यदि उन्हें पकड़ लिया तो उन्हें कहीं उस तरह आनंदित नहीं देख पाओंगे । इससे भी मन नहीं भरता तो चाहो जितना फोटो खींच कर उसे फ्रेम में मढ़वाकर अपने टीवी के बगल में सजा दो । वह फ्रेम में बंधा सोता रहेगा । उसमें कोई स्पन्दन नहीं होगा जिससे सौन्दर्य फूटे ।

जो कुछ भी लेना है समाज से उसे ले लो पर वह खत्म नहीं होगा । वे ठीक उसी तरह जैसे सदियों का प्यासा लगातार समुद्र का पानी पीते जाता है फिर भी वह सूखता नहीं है । जो देना है उसे खुशी – खुशी दे जाओ पर कोई भला समुद्र (समाज) को क्या देगा । सिवा अपने चंचल पैरों के निशान के । एक – दो दिन हरने के बाद सभी बेचैनी पूर्वक वापस चले जाते हैं ।

उन पैरों के निशान को समय मिटा देता है । यह उसका काम है । किसी के बेचैनी वापसी अपने स्वभाव के अनुसार समुद्र (समाज) अपने लहरों से मिटा देता है ।

इस कविता में कवि ने उपभोक्तावादी संस्कृति पर चोट किया है । उपभोग से तृप्ति नहीं मिलती है ।

https://www.evidyarthi.in/